

रविवार 26 अक्टूबर, 2025

विषय — मृत्यु के बाद की प्रक्रिया

स्वर्ण पाठ: धर्मयाह 29: 11

" क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानी की नहीं, वरन कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा। "

उत्तरदायी अध्ययन: कुलुस्सियों 1: 3, 9-13

- ³ हम तुम्हारे लिये नित प्रार्थना करके अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता अर्थात् परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।
- ⁹ इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ।
- ¹⁰ ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ।
- ¹¹ और उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होते जाओ, यहां तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।
- ¹² और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों।
- ¹³ उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. नीतिवचन 4: 23

²³ सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

2. प्रेरितों के काम 21: 39 (पॉल) (से 1st ,)

³⁹ पौलुस ने कहा,

3. प्रेरितों के काम 22: 3, 5 (अं)-8, 10-15

- ³ मैं तो यहूदी मनुष्य हूँ, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर में गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया गया, और बाप दादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर के लिये ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो।
- ⁵ इस बात के लिये महायाजक और सब पुरिनये गवाह हैं; कि उन में से मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियां लेकर दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहां हों उन्हें भी दण्ड दिलाने के लिये बान्धकर यरूशलेम में लाऊं।
- ⁶ जब मैं चलते चलते दमिश्क के निकट पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि दोपहर के लगभग एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी।
- ⁷ और मैं भूमि पर गिर पड़ा: और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? मैं ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, तू कौन है?
- ⁸ उस ने मुझ से कहा; मैं यीशु नासरी हूँ, जिस तू सताता है।
- ¹⁰ तब मैंने कहा; हे प्रभु मैं क्या करूं प्रभु ने मुझ से कहा; उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा।
- ¹¹ जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया।
- ¹² और हनन्याह नाम का व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहां के रहने वाले सब यहूदियों में सुनाम था, मेरे पास आया।
- ¹³ और खड़ा होकर मुझ से कहा; हे भाई शाऊल फिर देखने लग: उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल गए और मैं ने उसे देखा।
- ¹⁴ तब उस ने कहा; हमारे बाप दादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिये ठहराया है, कि तू उस की इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुंह से बातें सुने।
- ¹⁵ क्योंकि तू उस की ओर से सब मनुष्यों के साम्हने उन बातों का गवाह होगा, जो तू ने देखी और सुनी हैं।

4. प्रेरितों के काम 14: 1, 2, 19, 20

- ¹ इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वे यहूदियों की आराधनालय में साथ साथ गए, और ऐसी बातें की, कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया।
- ² परन्तु न मानने वाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में उकसाए, और बिगाड़ कर दिए।
- ¹⁹ परन्तु कितने यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलुस को पत्थरवाह किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए।
- ²⁰ पर जब चले उस की चारों ओर आ खड़े हुए, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे को चला गया।

5. प्रेरितों के काम 20: 7-12

- 7 सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।
- 8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत दीये जल रहे थे।
- 9 और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।
- 10 परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।
- 11 और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह चला गया।
- 12 और वे उस लड़के को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई॥

6. प्रेस्बिटरों के काम 27: 1 (से 1st), 2 (से 2nd), 14 (नहीं), 20, 21 (से 2nd), 22 (में)-25, 44 (और इसी तरह)

- 1 और यह ठहराया गया, कि हम जहाज पर इतालिया को जाएं।
- 2 और अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर जो आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर था,
- 14 ... थोड़ी देर में वहां से एक बड़ी आंधी उठी, जो यूरकुलीन कहलाती है।
- 20 और जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आंधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।
- 21 जब वे बहुत उपवास कर चुके, तो पौलुस ने उन के बीच में खड़ा होकर कहा।
- 22 परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूं, कि ढाढ़स बान्धो; क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, केवल जहाज की।
- 23 क्योंकि परमेश्वर जिस का मैं हूं, और जिस की सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा।
- 24 हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के साम्हने खड़ा होना अवश्य है: और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।
- 25 इसलिये, हे सज्जनों ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा।
- 44 और बाकी कोई पटरों पर, और कोई जहाज की और वस्तुओं के सहारे निकल जाएं, और इस रीति से सब कोई भूमि पर बच निकले॥

7. प्रेस्बिटरों के काम 28: 1-3, 5, 30, 31

- 1 जब हम बच निकले, तो जाना कि यह टापू मिलिते कहलाता है।
- 2 और उन जंगली लोगों ने हम पर अनोखी कृपा की; क्योंकि मेंह के कारण जो बरस रहा था और जाड़े के कारण उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया।

- ³ जब पौलुस ने लकिडियों का गढ़ा बटोरकर आग पर रखा, तो एक सांप आंच पाकर निकला और उसके हाथ से लिपट गया।
- ⁵ तब उस ने सांप को आग में झटक दिया, और उसे कुछ हानि न पहुंची।
- ³⁰ और वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा।
- ³¹ और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा॥

8. 2 कुस्तिथियों 5: 17

- ¹⁷ सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 291: 12-13

सार्वभौमिक मुक्ति प्रगति और परिवीक्षा पर टिकी हुई है, और उनके बिना अप्राप्य है।

2. 99: 5-12

प्रेरित कहते हैं, "डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ," और वह सीधे इसमें शामिल करता है कि: "क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है" (फिलिप्पियों 2: 12,13). सत्य ने राज्य की कुंजी प्रदान की है, और इस कुंजी के साथ क्रिश्चियन विज्ञान ने मानव समझ का द्वार खोल दिया है। कोई भी व्यक्ति न तो ताला तोड़ सकता है और न ही किसी अन्य दरवाजे से प्रवेश कर सकता है।

3. 233: 1-7

हर दिन हम पर क्रिश्चियन शक्ति के दावों के बजाय उच्चतर प्रमाणों की मांग की जाती है। ये प्रमाण केवल आत्मा की सामर्थ्य द्वारा पाप, बीमारी और मृत्यु के विनाश में निहित हैं, जैसा कि यीशु ने उन्हें नष्ट कर दिया था। यह प्रगति का एक तत्व है, और प्रगति ईश्वर का नियम है, जिसका नियम हमसे केवल वही मांगता है जिसे हम निश्चित रूप से पूरा कर सकते हैं।

4. 254: 2-23

व्यक्ति सुसंगत हैं, जो देख रहे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं, "वे दौड़ सकते हैं और नमित करेंगे, जा रहे हैं और थकेंगे न," जो तेजी से अच्छाई हासिल करते हैं और अपना स्थान प्राप्त करते हैं, या धीरे-धीरे प्राप्त करते हैं और निराश नहीं होते हैं। भगवान को पूर्णता की आवश्यकता है, लेकिन तब तक नहीं जब तक आत्मा और मांस के

बीच लड़ाई नहीं होती और जीत हासिल होती है। अस्तित्व के आध्यात्मिक तथ्य चरण दर चरण प्राप्त होने से पहले खाना, पीना या भौतिक रूप से कपड़े पहनना बंद करना वैध नहीं है। जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है। अपूर्ण नश्वर धीरे-धीरे आध्यात्मिक पूर्णता के चरम को समझ लेते हैं; लेकिन दुर्दशा शुरू करने और होने की बड़ी समस्या को प्रदर्शित करने के संघर्ष को जारी रखने के लिए, बहुत कुछ कर रहा है।

कामुक युगों के दौरान, पूर्ण क्रिश्चियन साइंस को मृत्यु नामक परिवर्तन से पहले प्राप्त नहीं किया जा सकता है, क्योंकि हमारे पास वह शक्ति नहीं है जो हम नहीं समझते हैं। लेकिन मानव स्वयं को प्रचारित करना चाहिए। यह कार्य ईश्वर हमें आज प्रेमपूर्वक स्वीकार करने के लिए, और इतनी तेजी से व्यावहारिक सामग्री को छोड़ने के लिए, और आध्यात्मिक कार्य करने के लिए कहता है जो बाहरी और वास्तविक को निर्धारित करता है।

5. 428: 30-6

लेखक ने आशाहीन जैविक बीमारी को ठीक किया है, और जीवन और स्वास्थ्य को भगवान की समझ के माध्यम से उठाया है जो कि मर रहा था। यह मानना कि पाप सर्वशक्तिमान और अनन्त जीवन पर हावी हो सकता है, यह पाप है और इस जीवन को इस समझ के साथ प्रकाश में लाया जाना चाहिए कि कोई मृत्यु नहीं है, साथ ही साथ आत्मा के अन्य अनुग्रह द्वारा भी। हालांकि, हमें नियंत्रण के अधिक सरल प्रदर्शनों के साथ शुरू करना चाहिए, और जितनी जल्दी हम शुरू करेंगे, उतना ही बेहतर होगा।

6. 296: 4 (प्रगति)-13

प्रगति अनुभव से पैदा होती है। यह नश्वर मनुष्य का पकना है, जिसके माध्यम से नश्वर को अमर के लिए गिरा दिया जाता है। या तो यहां या उसके बाद, पीड़ित या विज्ञान को जीवन और मन के बारे में सभी भ्रमों को नष्ट करना होगा, और भौतिक भावना और स्वयं को पुनः उत्पन्न करना होगा। अपने कर्मों के साथ पुरानी मानवता को बंद करना होगा। कामुक या पापी कुछ भी अमर नहीं है। एक झूठी भौतिक भावना और पाप की मृत्यु, कार्बनिक पदार्थों की मृत्यु नहीं है, जो मनुष्य और जीवन, सामंजस्यपूर्ण, वास्तविक और शाश्वत को प्रकट करती है।

7. 258: 9-15

मनुष्य अंदर एक मन के साथ एक भौतिक रूप से अधिक है, जिसे अमर होने के लिए अपने वातावरण से बचना चाहिए। मनुष्य अनंतता को दर्शाता है, और यह प्रतिबिंब भगवान का सही विचार है।

ईश्वर मनुष्य में अनंत विचार व्यक्त करता है जो हमेशा अपने आप को विकसित करता है, एक व्यापक आधार से ऊंचा और ऊंचा होता है।

8. 324: 2-6, 13 (यह)-18

झूठे स्थलों को छोड़ने की खुशी और उन्हें गायब देखने के लिए खुशी, - यह स्वभाव परम सद्भाव को बढ़ाने में मदद करता है। भाव और आत्म की शुद्धि ही प्रगति का प्रमाण है। “धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।”

जिस मार्ग से यह समझ पैदा होती है कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है, सीधा और संकीर्ण है। यह मांस के साथ एक युद्ध है, जिसमें हमें पाप, बीमारी, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, या तो इसके बाद, या - निश्चित रूप से इससे पहले कि हम आत्मा के लक्ष्य तक पहुँच सकें, या परमेश्वर में जीवन पा सकें।

9. 291: 23-31

जैसे मृत्यु नश्वर मनुष्य को पाती है, वैसे ही वह मृत्यु के बाद भी रहेगा, जब तक कि परिक्षण और विकास आवश्यक परिवर्तन को प्रभावित नहीं कर देते। मन कभी धूल नहीं बनता। कब्र से मन या जीवन का कोई पुनरुत्थान नहीं है, क्योंकि कब्र का इन दोनों पर कोई अधिकार नहीं है।

कोई भी अंतिम निर्णय नश्वर की प्रतीक्षा नहीं करता है, क्योंकि ज्ञान का निर्णय दिन प्रति घंटा और लगातार आता है, यहां तक कि वह निर्णय जिसके द्वारा नश्वर मनुष्य को सभी भौतिक त्रुटि से विभाजित किया जाता है।

10. 271: 20-2

हमारे गुरु ने कहा, "परन्तु वह सहायक... तुम्हें सब कुछ सिखाएगा।" जब ईसाई धर्म का विज्ञान प्रकट होगा, तो वह तुम्हें समस्त सत्य की ओर ले जाएगा। पर्वतीय उपदेश इस विज्ञान का सार है, और इसका परिणाम यीशु की मृत्यु नहीं, बल्कि अनन्त जीवन है।

जो लोग सत्य के लिए अपने जाल छोड़ने या उन्हें सही दिशा में डालने को तैयार हैं, उनके पास पहले की तरह अब भी ईसाई उपचार सीखने और उसका अभ्यास करने का अवसर है। शास्त्रों में यह निहित है। वचन का आध्यात्मिक अर्थ यह शक्ति प्रदान करता है। लेकिन, जैसा कि पौलुस कहते हैं, "प्रचारक के बिना वे कैसे सुनेंगे? और यदि भेजे न जाएँ, तो वे कैसे प्रचार करेंगे?" यदि भेजे भी जाएँ, तो यदि लोग न सुनें, तो वे कैसे प्रचार करेंगे, धर्मांतरित करेंगे और लोगों को कैसे चंगा करेंगे?

11. 254: 27-32

यदि आप सत्य के सदैव उत्तेजित लेकिन स्वास्थ्यप्रद जल पर अपनी छाल चलाते हैं, तो आप तूफानों का सामना करेंगे। आपकी अच्छाई की बात बुरी होगी। यह क्रॉस है। इसे उठाओ और सहन करो, क्योंकि इसके माध्यम से तुम जीतते हो और मुकुट पहनते हो। पृथ्वी पर तीर्थयात्री, तेरा घर स्वर्ग है; अजनबी, तुम भगवान के मेहमान हो।

12. 568: 24-30

एक पाप पर जीत के लिए, हम धन्यवाद देते हैं और मेजबानों के भगवान की महिमा करते हैं। सभी पापों पर शक्तिशाली विजय के बारे में हम क्या कहें? एक ऊँचा गीत, जो पहले से कहीं अधिक मधुर उच्च स्वर्ग तक पहुँच गया है, अब अधिक स्पष्ट और मसीह के महान हृदय के निकट आता है; क्योंकि दोष लगाने वाला वहाँ नहीं है, और प्रेम उसके आदिम और चिरस्थायी तनाव को दूर करता है।

13. 492: 7 (प्राणी)-12

पवित्र होना, समरसता, अमरता है। यह पहले से ही साबित हो गया है कि इस का ज्ञान, यहाँ तक कि छोटी सी डिग्री में, नश्वर लोगों के भौतिक और नैतिक स्तर को ऊपर उठाएगा, दीर्घायु को बढ़ाएगा, चरित्र को शुद्ध और ऊँचा करेगा। इस प्रकार प्रगति अंततः सभी त्रुटि को नष्ट कर देगी, और अमरता को प्रकाश में लाएगी।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6